63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: G42 Participant Code: 308

"सपनों से है मेरा पंग"

कुछ साल पहले की बात है। एक गाँव में नेहा नामक एक लड़की रहती थी। उस समय में उनकी गाँव के सबी लोग बहुत्ही मुसीबत जील रही थी। क्यूंकी उस समय में गाँव के आदे से भी ज़्यादा लोग गरीब लोग थे। इस कारण से बहुत सारी पालतु जानवरों की म्रत्यु हो रही थी। नेहा के घर में भी इसी हालत थी। इसलिए नेहा की दादी ने उसकी पढायी की ज़िम्मिदारी लेते हुए उसको अपने साथ दादी को घर लेगयी। पर नेहा को अपनी पापा और मम्मी की साथ रेहनी की इच्छा थी। क्यूंकी उसकी पापा ने उसको दस्वी कक्षा तक की पढायी की ज़िम्मिदारी खुद उटाकर उसको पढालिया था। उसकी पापा एक किसान है। वह सारा दिन खेतों मे काम करते है।

नेहा की माँ भी सारी दिन नेहा की भलाई के लिए काम करने के लिए दूसरों की

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 308

घर मे जाती है। नेहा को अपनी परीवार को बहुत पसंत है। नेहा की यह इच्छा थी की वह अपनी पूरी ज़िंतगी अपनी परीवार के लिए जी पाऊ। नेहा ने अपनी पापा और मम्मी के सारे परीस्त्रम देखते-देखते बडी हुइ थी। इसलिए उसको पैसे की उपयोग कैसे करनी है और किस काम के लिए करनी है यह पता थी।

नेहा की पास एक रहस्य थी यानी एक बात जो किसी को ना पता हो। उसने यह बात अभी तक उसकी परिवार को भी नही ~~बताया~~ है बताया है। यह बात किसी साधारण लड़की की पास हो नही सकता। क्यूंकी यह बात कुछ अपनी दिमाग से दौड कर मन मे आनी चाहिए। जिस बात जिसे किसी को ना बताये जीना ही पूरा करना चाहिए। उसी बात को ही हम 'सपना' कहते है।

नेहा अपनी बचपन से ही बहुत अच्छी तरह से नाचती थी। और उसको नाचना बहुत पसंत भी थी। उसकी यह सपना थी की बडे

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 642 Participant Code: 308

होकर एक अच्छी न्रतक बननी थी। वो भी किसी सादारण न्रतक नही उसे 'मैकिल जाक्सन' की तरह एक न्रतक बननी थी। पर उस समय में, उसकी गाँव की एक विश्वास थी की पंद्रह साल के बाद सभी लड़कीयों को शादी करके अपनी पती के पास बेच देती थी। पर नेहा की सारी सहेलियों को तो बस शादी करने की ही शोक थी। इसलिए उनकी पिताजियों ने सभी को शादी करके पतियों के घर बेज दिया।

एक दिन नेहा कि पिताजी उससे मिलने के लिए दादी की घर आयी थी। पिता की हालत देखकर नेहा की आखें आँसु से भरने लगी। खेतों मे काम करते करते हात पैर सब में चोट आए हुए है और बुडापन की वजह से बहुत सारी बिमारीयाँ भी आगयी है। नेहा ने बाहर आये हुए पापा को अंतर ~~बुला~~। बुलाकर बैठादिया और उनसे पूँछा: "अरे बापू आप इतने बिमार होने की बात भी इतनी दूर पैदल चलकर क्यूँ आए हो?" ~~यह~~ नेहा

④

की यह बात सुनकर पापा की आखों मे से आँसू नीचे टपकने लगे। पापा ने नेहा से कहा: " अरे, बिडियाँ मे तुमसे ही मिलने के लिए आई हूँ। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।" यह सुनकर नेहा ने पूँछा: " क्या मुझसे? मुझसे इतनी बड़ी बात क्या करनी है आपको जो आप इतनी जलदी मे इदर दोड़के आए हो?" पिताजी बिना कुछ बोले ही अपने जेब से एक आदमी का चित्र निकालकर नेहा को देदिया। नेहा को यह सब देखते ही समझ में आगयी थी की पापा ने उसकी शादी के लिए तैयारी कर रहा है। यह सब देखकर नेहा ने हँसी और दुःख दोनो के साथ पापा से पूछा: "क्या बापू, आप मुझे आपके सिर से उतार रही हो क्या?" यह सुनते ही पापा ने वहा से उठकर नेहा के हाथ पकड़कर उसके आँखें मे देखते देखते कहा: " बिडियाँ, मे बूढा होता जारहा हूँ, अब मुझमे इतनी हिम्मत नही है की मे तुमे अधूरा

(5)

तुम्हारा मम्मी के पास अधूरा छोड कर चले जाऊँ, तुमने तो ~~मेरी~~ मेरा हालत देखलिया है ना मे अगली दो साल के पहले ही बगवान के पास चले जाऊँगा. इसलिए मेरा बिटिया इस शादी के लिए इज्जाज़त दो ना।" यह सब सुनते ही नेहा ने अपनी सपने को अपनी पंद्रह साल के उम्र मे अधूरा छोड़ने की फैसला लिया।

दो महीने के बाद पंद्रह साल की उस लडकी ने उन्नीस साल का एक आदमी से शादी करलिया। अपने सपनो की पंख को नेहा ने उस दिन ही ताला लगाकर अपनी अलमीरा मे रखा था। कुच्छ दिन बाद पापा ने ~~अपना~~ अपना वादा निबाया, उन्होंने बगवान के पास ~~चला~~ गया। इसको ~~बाद~~ बाद नेहा अपने पती से कहाँ की अपनी माँ को घर लेकर आनी है पर उसने इसका इज्जाज़त नही दिया और बोला: ~~की~~ "एक बूढ़ी आदमी की म्रत्यु होने पर ही मुझे इतने ज्यादा गर्जा हुआ है जिसकी वजह से मेरा घर भी गरीबी मे डूब

सकता है, और इसकी ऊपर से तुम वो बूढे स्त्री को भी मेरे बुलाना चाहते हो क्या, मै इतना भी अमीर आदमी नही हूँ जो इस गाँव के सारे बूडे लोगों को मेरे घर ला सकूँ।" यह बात अपनी पती की मूह से सुनने की बाद नेहा को उनसे बहुत ज़्यादा नफरत होने लगी।

उस दिन की बाद सभी दिन नेहा की पती उससे इस तरह ही पेश आने लगा। नेहा को उसके पती ने बहुत ज़ोर से मारने लगी। उसे बहुत ज़ोर की चोट आने भी लगी। पर नेहा ने बहुत सालों तक अपनी पापा की उन बातों की अदाय पर जीने की कोशिश किया।

लगभग चेह सालों तक उसने उसकी पती की मार-और पीठ सभ की होने पर भी जीया। पर एक दिन नेहा की पती ने उसे बहुत ज़ोर से मारलिया की उसके हाथ की हड्डी ~~टूट~~ टूट गयी। नेहा को इतना गुसा ~~गुजा~~ आया की उसने ~~पा~~ पती की घर चोडकर अपनी घर वापस आगयी।

(7)

Item Code: 642 Participant Code: 308

छेह सालों के बाद अपनी बैटी को देखने की कारण उसकी माँ उसको गले मे लगाकर बहुत देर तक रो लिया। नेहा को भी एहसास होने लगी की पापा की बाते सुनकर अपनी बाकी की जिंदगी वो जी नही सकता है। इसीलिए उसने अपने ताला लगाया हुआ पंग वापस लाने की सोचने लगी। और जो बात उसको अपनी पापा की म्रत्यु की पहले ~~अपनी~~ उनसे बता नही पाया था वह बात उसने अपनी माँ से केह दिया। और यह सुनकर उसकी माँ को इतनी खुशी हुआ की वो नेहा को गले लगाकर रोने लगी। क्यूंकी कुच्छ सपने एसे होते जो सच होने पर सिर्फ हमारा ही नही अधूरा होने वाले सब सपने एक साथ ~~सच~~ सच्छ हो जाते है। ऐसा ही एक सपना थी नेहा की और उस सपने की पंग अब सीर्फ एक पंग ही नही बलकी एक आग से बनाया हुआ ज्वाला मुघी ही है।

दो हफ्ते की बाद नेहा ने अपनी ~~ग्रा~~ डांस की परिशीलन फिर से शुरु किया और वह फिर से अपनी अदूरा होने वाली पडायी भी ~~शुरु~~ शुरु किया। उसने एक गुरु की पास गयी और उन्होंने उसे डांस सीकाने लगी। अपने गुरु को नेहा अपनी भगवान की तरह ही समझ ती थी। और गुरु नेहा को अपनी बैठी की तरह ही समझ ती थी।

दो महीने हवा की तरह गुज़र गयी। किसी को एहसास भी नही हुआ की दो महीने बीक चुकी है। नेहा ने उसकी गुरु की पास रहकर बहुत्ही अच्छी तरह से अपनी न्रत्य रुप सीकते आयी। एक दिन नेहा की गुरु ने उसे बुलाकर कहा ~~कहा~~: "ओई बिडियाँ, एक बात बताना है तुमसे।" नेहा ने गुरु से पूँच्छा की क्या बात है। गुरु ने जवाब दिया: "अरे, तुमने कोई पंग अपनी घर मे चुपाकर ~~रखा~~ रखा है क्या?" नेहा ने कहा: "अरे आप ये कैसी बात कर रही हो गुरुजी, कैसा ~~पांख~~ पंग?" गुरु

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാം കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 642 Participant Code: 308

मे नेहा की मूह पर देखकर ~~बोला~~ बोला : "बिडियाँ मैं ~~मे~~ कौंयी ~~कव्वे~~ कैव्वे या तौते के पंग के बारे मे नहीं बात कर रहा हूँ।" नेहा ने कहा : "~~के~~ फिर किसके पंग है गुरुजी ?" गुरुजी ने हँसकर कहा: "बिडियाँ मे उस पंग का बारे मे बात कर रहा हूँ जिसे तुम चेह साल पहले अपनी सपनो से बनाया था और उस समय मे ही ताला लगया था और ये वही पंग है जिसे तुम अभी वापस उगलिया है।" नेहा ने कहा : "गुरुजी क्या आप मुझे समझ मे आने की तरह बात कर सकते है क्या ?" गुरुजी ने ~~बोल~~ कहा : "ठीक है-ठीक है मे अब चुपा ने की बदले मे तुम्हे बताती हुँ, मे उस दिन तुमसे बोला था ना की की कुच्छ डान्स की कार्यक्रम मुम्बई मे होने वाले है ?" नेहा ने कहा : "हाँ, बोला था" गुरु ने कहा : "हाँ, उस कार्यक्रम के लिए मे तुम्हारा कुच्छ न्रत्य करने वाली वीडियों बेजि थी और अब कुछ देर पहले उनसे संदेश आया की तुम ~~हे~~ उस कार्यक्रम मे बाग ले सकते है।"

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 308

यह सुनकर नेहा को बहुत खुशी हुई। इतना खुशी हुई की उसने गाना बहुत्ही जोर से लगकर नाचने लगी। यह देखकर गुरु भी उसके साथ नाचने लगा।

एक हफ्ते की बाद नेहा एक दिन अपनी डान्स क्लास के बाद घर जारहा था तब नेहा की सामने एक घाडी आकर रुकी। नेहा को पहले कुच्छ समझ मे नही आया। पर कुच्छ देर के बाद घाडी से एक आदमी नीचे उतारलिया। नेहा उस आदमी को देखकर कुच्छ हैरान भी हुआ और उसे डर भी होने लगा। वह उसकी पती था। उसने नेहा को पास आकर कहा: "अरे नेहा तुम कैसे हो? ठीक होना? कैसी है तुम्हारी माँ वो मर गयी है या अब भी जिंता है?"

नेहा ने इसको कुच्छ जवाब नही दिया। पती ने नेहा से कहा: "क्या तुम मेरे साथ आओगे क्या? मे मेरे सारे सपने पूरा करलिया है और अब मेरा सपना

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 642 Participant Code: 308

सिर्फ तुम ही हैं।" नेहा ने जवाब दिया: अरे महेश मे एक बात बताऊँ क्या हर लड़की की सिर्फ शादी करने की या बच्चों को पैदा करने की सपने ही नही होते होती है। कुछ नारीयाँ ऐसी भी है की अपनी सपनो को सिर्फ अपने ही नही उसकी अपनों के भी सपने मान कर उसे पूरा करनो चाहती है और जिस आदमी को ऐसो लडकीयों को समझने की बुद्धिमाग नही होता ना उनको उस लडकीयों को अपना बनाने का कुछ ओकाद नही होता है। और एक लड़को या स्त्री को माँ जेसा देख नही जा सकता है तो वो एक इनसान भी नही है एक आदमो भी नही है। सही है मेरी कहानी में तुम्ही है दुशमन पर में कोयो नायक नही बलकी नायीक हुँ। एक बात और सपने सिर्फ लडकों के लिए नही है वो इनसान के लिए होती है, और "मुझे भी है एक सपना? पर तेरे तरह नही मेरी तरह."

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)